Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शिक्षा में मनोविज्ञान की आधारभूत भूमिका

श्रीमती कविता रामाणी* श्रीमती संध्या पाटिल**

* पूनमचंद गुप्ता वोकेशनल महाविद्यालय, खंडवा (म.प्र.) भारत
** पूनमचंद गुप्ता वोकेशनल महाविद्यालय, खंडवा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति की धारा पर नियंत्रण कर सकता है, शिक्षा को शब्द संग्रह अथवा शब्द समूह की स्मृति में न देखकर विभिन्न शक्तियों के विकास के रूप में देखा जाना चाहिए। शिक्षा स्वयं को पहचानने की, अपनी शक्तियों की पहचान की क्षमता का विकास करती है। शिक्षा एक साधन है जो व्यक्ति के आंतरिक गुणों को प्रखर करती है, उसमें जो आतंरिक शक्तियों है उनका विकास करती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि बालक के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक, बौद्धिक एवं आंतरिक ज्ञान को बाहर लाने वाली एक क्रिया है। शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास होता है, शिक्षा की प्रक्रिया जीवन पर्यत चलती है, कभी रुकती नहीं है।

शब्द कुंजी – शिक्षा, मनोविज्ञान, अधिगम, क्षमता, करके सीखना, आंतरिक शक्तियां, पाठ्यचर्या, विकास, सर्वांगीण विकास, शिक्षक, विद्यार्थी, पाठ्यक्रम, सीखना और सिखाना ।

परिकल्पना:

1. शिक्षा मनोवैज्ञानिक एक दूसरे के पूरक हैं।
2. शिक्षा और मनोविज्ञान का स्वयं में भी महत्वपूर्ण स्थान है, परंतु दोनों का एक दूसरे के बिना निर्वाह नहीं हो सकता।
3. शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा बालकों की आंतरिक शक्तियों का विकास होता है।
4. शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा समस्यात्मक बालकों का अध्ययन किया जाता है।
5. मनोविज्ञान मानसिक विकास का सबसे बड़ा उपागम है।
6. शिक्षा में मनोविज्ञान के द्वारा मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

शिक्षा– शिक्षा सीखना नहीं वरन् मस्तिष्क की शक्तियों का अभ्यास और विकास है, बालक के भावी जीवन की तैयारी तथा उसकी क्षमताओं को निखारना शिक्षा का उद्देश्य समझा जाता है। शिक्षा, व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है जिसके द्वारा वह सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच सकता है। शिक्षा शब्द का प्रयोग तीन रूपों में किया जाता है–

1– ज्ञान के लिए, 2– मानव की शारीरिक एवं मानसिक व्यवहार में परिवर्तन हेतु, 3– पाठ्यचर्या के विकास के लिए।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के 'शिक्ष' धातु से बना है। 'शिक्ष' धातु में 'आ' लगाने से 'शिक्षा' की उत्पत्ति हुई है। शिक्षा शब्द से तात्पर्य 'सीखना और सिखाना' है, जो जीवन पर्यत चलती है। बालक को प्राकृतिक वातावरण के साथ अनुकूलन करना पड़ता है। थोड़ी आयु बढ़ने के साथ वह बालक सामाजिक व आध्यात्मिक वातावरण के साथ सांमजस्य स्थापित करते समय अनेक अनुभव अर्जित करता है ये अर्जित अनुभव ही शिक्षा है। व्यापक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति शिक्षक और विद्यार्थी दोनों है क्योंकि सीखना और सिखाना प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। सिखाने वाली प्रत्येक परिस्थिति या स्थान विद्यालय है तथा सिखाने वाला प्रत्येक व्यक्ति शिक्षक है और जिनको वह सिखाता है वह सभी शिष्य है। बालक का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब उसके जीवन के प्रत्येक पहलू पर दृष्टिपात किया जाए । प्रथमत: वह अपने साथ बहुत सी जन्मजात प्रवृत्तियों को लेकर जन्म लेता है, उनका प्रगतिशील समाज के अनुकूल विकास करना शिक्षा का ही कार्य है। बालक की समस्त शक्तियों को विकसित करने के लिए स्वतंत्र वातावरण की सृष्टि होनी चाहिए जिससे उसे अपनी क्रियाओ को अवरुद्ध न करना पड़े। कभी–कभी माता–पिता के अभाव में अनाथ बच्चों को मनचाहा कार्य करने का अवसर नहीं मिल पाता। इसका प्रभाव उसके पनपते व्यक्तित्व पर पड़ेगा। इसलिए जीवन में संतुलन की आवश्यकता हमें हर कदम पर है। शिक्षा वह औषधि है जो जीवन को संतुलित करती है। शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया माना है : शिक्षक, समाज एवं पाठ्यक्रम, विद्यार्थी ।

इसे हम शिक्षा का त्रिकोण कह सकते हैं इस शिक्षा का मुख्य कार्य बालक का सर्वांगीण विकास कर आगे बढ़ने योग्य बनाना। बालकों को शिक्षा हम अनेक प्रकार से दे सकते हैं —

1. नियमित तथा अनियमित शिक्षा, 2. प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष शिक्षा, 3. सामान्य तथा विशिष्ट शिक्षा 4. सामूहिक तथा वैयक्तिक शिक्षा । इन चार प्रकार से हम शिक्षा की उपयोगिता को समझ सकते हैं और समझा सकते हैं।

मनोविज्ञान क्या है– मनोविज्ञान मन और व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन हैद्य मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रिया मस्तिष्क के कार्यों और व्यवहार के अध्ययन के समझ में सक्रिय रूप से शामिल है। इसमें मानव मन की विभिन्न अवस्थाओं और क्रियाओं का तथा उनके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान का अविर्भाव 19वीं शताब्दी में सन 1879 ईसवीं में हुआ था। विलियम वुन्ट ने मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला की स्थापना की थी।

मनोविज्ञान की विकासात्मक यात्रा:

1. आत्मा के रूप में मनोविज्ञान
2. मन के रूप में मनोविज्ञान
3. चेतना के रूप में मनोविज्ञान

4. व्यवहार के रूप में मनोविज्ञान

इन चार अवस्थाओं के द्वारा मनोविज्ञान ने अपने विकास की यात्रा पूर्ण की। अंत में मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना गया क्योंकि व्यक्ति के व्यवहार से ही हम उसका अवलोकन कर सकते हैं और हमारे व्यवहार के द्वारा ही आंतरिक गुण भी बाहर आते हैं। मनोवैज्ञानिक ऐसा विज्ञान है जो क्रमबद्ध रूप से प्रेक्षणीय व्यवहार का अध्ययन करता है तथा प्राणी के भीतर के मानसिक एवं दैहिक प्रक्रियाओं जैसे– चिंतन, भाव आदि तथा वातावरण की घटनाओं के साथ उनका संबंध जोड़कर अध्ययन करता है। मानसिक प्रक्रियाओं के अंतर्गत –संवेदना, अवधान, प्रत्यक्षण, सीखना, स्मृति चिंतन आदि आते हैं। मनोविज्ञान की कार्य क्षेत्र को समझने के लिए उसे तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है:

1. पहली श्रेणी में शिक्षण का कार्य।
2. दूसरी श्रेणी में मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर शोध।
3. तीसरी श्रेणी में मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर कौशलों एवं तकनीक का उपयोग।

मनोविज्ञान की अनेक शाखाएं हैं इनमें से कुछ प्रमुख शाखाएं निम्नलिखित प्रकार से है–

सामाजिक मनोविज्ञान, असामान्य मनोविज्ञान, नैदानिक मनोविज्ञान, व्यावहारिक मनोविज्ञान, स्वास्थ्य और जैविक मनोविज्ञान,फॉरेंसिक मनोविज्ञान, विकासात्मक मनोविज्ञान, पशु मनोविज्ञान,औद्योगिक मनोविज्ञान, सैन्य मनोविज्ञान और शिक्षा मनोविज्ञान। इन शाखाओं में मनोविज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग किया जाता है और बालकों के व्यवहार का विस्तृत रूप से अध्ययन करने के लिए हम शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन करते हैं।

मनोविज्ञान में शिक्षा– शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा मानव व्यवहार में परिवर्तन करके उसे उत्तम बनती है। मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है, शिक्षा को अपने प्रत्येक कार्य के लिए मनोविज्ञान द्वारा स्वीकृति प्राप्त करनी पड़ती है। शिक्षा को सर्वप्रथम वैज्ञानिक रूप देने का श्रेय शिक्षा मनोविज्ञान को ही जाता है मनोविज्ञान की विषय वस्तु का उपयोग शैक्षिक समस्याओं के समाधान करने हेतु किया जाता है। मनोविज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में उन मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन करता है जो एक बालक एवं उसके स्कूल के अध्यापक तथा अध्यापन कार्य से संबंधित है। मनोविज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र में कई वैचारिक तथा व्यावहारिक परिवर्तन किए हैद्य शिक्षा के क्षेत्र में लोगों की प्राचीन धारणाओं को तोड़कर नवीन अवधारणा को विकसित किया है। मनोविज्ञान के द्वारा शिक्षा बाल केंद्रित बनी हैद्य अब शिक्षा बालक हेतु है न कि बालक शिक्षा हेतु। शिक्षा में बालकों की विभिन्न अवस्थाओं का ज्ञान मनोविज्ञान के द्वारा प्राप्त हुआ है, चाहें व्यक्तिगत भिन्नताएं हों, पाठ्यक्रम निर्माण में हों, रुचियां तथा मूल प्रवृत्तियां हों, पाठ्य सहगामी क्रियाएं हों, इन सब में बदलाव शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा ही आता है। शिक्षा, मनोविज्ञान से कभी पृथक नहीं रही है, मनोविज्ञान चाहे दर्शन के रूप में रहा हो, उसने शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का विकास करने में, विवेचन व विश्लेषण करने में सहायता प्रदान की है।

शिक्षा में मनोविज्ञान– शिक्षा मनोविज्ञान शशिक्षाश और 'मनोविज्ञान' दो शब्दों से मिलकर बना है। शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ सामाजिक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा से और व्यावहारिक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान से ग्रहण करता है। यह मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है और शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है बिना मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षण प्रक्रिया सुचारू रूप से संपन्न नहीं हो सकती। शिक्षा मनोविज्ञान से तात्पर्य है शिक्षक व सिखाने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक के सिद्धांतों का प्रयोग करने से है। शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है, इसमें शिक्षक की प्रभावशाली तकनीक को विकसित करना तथा अधिगमकर्ता की योग्यताओं एवं अभिरुचियों का आकलन करना है। यह व्यावहारिक मनोविज्ञान की शाखा है जो शिक्षक व सिखाने की प्रक्रिया को सुधारने में प्रयासरत है। शिक्षा जगत में शिक्षा मनोविज्ञान का कई महत्वपूर्ण योगदान हैं। यह शिक्षक को एक सफल शिक्षक बनने में उपयोगी समझ तथा ज्ञान प्रदान करता है, विद्यार्थी भी शिक्षा मनोविज्ञान से लाभ प्राप्त कर अपना संवेगात्मक, शारीरिक तथा मानसिक विकास को संतुलित कर सकते हैं। शैक्षिक मनोविज्ञान, पाठ्यक्रम और पाठ विकास के साथ–साथ कक्षा प्रबंधन दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है, उदाहरण के लिए शिक्षक, शैक्षिक मनोविज्ञान की अवधारणाओं का प्रयोग उन तरीकों को समझने और संबोधित करने के लिए कर सकते हैं, जिनमें तेजी से बढ़ती प्रौद्योगिकियां, उनके छात्रों को सिखाने में मदद करती हैं। शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा की पद्धतियों एवं सिद्धांतों का निर्माण करता हैद्य शिक्षा मनोविज्ञान में शिक्षा के सभी क्षेत्रों का प्रभाव है, वर्तमान शिक्षा प्रणाली इससे अत्यधिक प्रभावित है क्योंकि यह शिक्षा संबंधी समस्याओं को सुलझाने में समर्थ है।

मनोविज्ञान का शिक्षा के साथ संबंध– मनोविज्ञान का शिक्षा के साथ निम्न प्रकार से संबंध है:

(1) मनोविज्ञान तथा शिक्षा के उद्देश्य– मनोविज्ञान के द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते है अथवा नहींद्य शिक्षक ने अपने उद्देश्य में कितनी सफलता प्राप्त की है, यह मनोविज्ञान के द्वारा ही जाना जा सकता है।

(2) मनोविज्ञान तथा पाठ्यक्रम– मनोविज्ञान में बालक की सर्वांगीण विकास में पाठ सहगामी क्रियाओं को महत्वपूर्ण बनाया है इसलिए विद्यालयों में खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की विशेष रूप से व्यवस्था की जाती है।

(3) मनोविज्ञान तथा पाठ पुस्तकें – पाठ्य पुस्तकों का निर्माण बालक की आयु रुचियां और मानसिक योग्यताओं को ध्यान में रखकर करना चाहिए, जिससे वह सरलता से शिक्षा प्राप्त कर सके।

(4) मनोविज्ञान तथा समय सारणी– शिक्षा में मनोविज्ञान द्वारा उपयोग किए जाने वाला मुख्य सिद्धांत है कि नवीन ज्ञान का विकास पूर्व ज्ञान के आधार पर किया जाना चाहिए। मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षण प्रक्रिया हेतु समय सारणी का निर्माण सरलता से किया जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों की शिक्षण क्रिया में रूचि बढ़ती है।

(5) मनोविज्ञान तथा शिक्षण विधियां– मनोविज्ञान के द्वारा कई शिक्षण विधियों का शिक्षण प्रणाली में प्रयोग किया जाता है, जिसमे से बालकों के 'करके सीखने' एवं 'खेल–खेल में' सिखने पर अत्यधिक बल दिया गया है। इस उद्देश्य से 'करके सीखना', खेल द्वारा सीखना, रेडियो पर्यटन, चलचित्र आदि को शिक्षण विधियों में स्थान दिया गया।

(6) मनोविज्ञान तथा अनुशासन– मनोविज्ञान द्वारा प्रेम, प्रशंसा और सहानुभूति को अनुशासन के लिए एक अच्छा आधार माना है। मनोविज्ञान, शिक्षक और विद्यार्थी दोनों में अनुशासन गुणों का विकास करता है।

(7) मनोविज्ञान तथा अनुसंधान– मनोविज्ञान ने सीखने की प्रक्रिया के संबंध में खोज करके अनेक उपयोगी नियम एवं सिद्धांत बनाए हैं, इनका प्रयोग करने से बालक कम समय में और अधिक अच्छी प्रकार से सीख सकता है।

(8) मनोविज्ञान तथा परीक्षाएं– मनोविज्ञान द्वारा बुद्धि परीक्षा व्यक्तित्व परीक्षा तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षा जैसी नई परिक्षण विधियों का परिक्षण एवं मूल्यांकन के लिए प्रयोग किया गया है।

(9) मनोविज्ञान तथा अध्यापक और समाज – शिक्षा में तीन प्रकार के संबंध होते हैं - बालक तथा शिक्षक का संबंध, बालक और समाज का संबंध तथा बालक और विषय का संबंध। शिक्षा में सफलता तभी मिल सकती है जब इन तीनों का संबंध उचित हो।

निष्कर्ष– इस प्रकार हमने देखा कि शिक्षा में मनोविज्ञान की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है शिक्षा को हम जितना मनोवैज्ञानिक तरीके से विद्यार्थियों को प्रदान करेंगे उतना ही ज्यादा विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक रूप से विकास होगा। शिक्षा, विद्यार्थी में स्वयं को पहचानने की क्षमता का विकास करती है, स्व-अनुशासन की भावना का विकास होता है। शिक्षा को मनोवैज्ञानिक रूप से हम जितना समझेंगे उतना ही विद्यार्थियों और व्यक्तियों की आतंरिक शक्तियां उनके अंदर से बाह्य रूप में आएंगी और यह शक्तियां बाह्य रूप में आने की पश्चात निखर कर आती है। नवीन शिक्षण विधियां और शिक्षण सामग्री के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों के मन को स्पर्श करता हैद्य यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। शिक्षा और मनोविज्ञान का संबंध वर्षों से निरंतरता लिए हुए हैं। बालकों के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए हम शिक्षा और मनोविज्ञान का प्रयोग करते हैं। इस तरह शिक्षा में मनोविज्ञान की आधारभूत भूमिका होती है क्योंकि शिक्षा, मनोविज्ञान के बिना अपूर्ण है, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और यह प्रक्रिया जीवन पर्यत चलती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शिक्षा मनोविज्ञान एस. के. मंगल, 2007
2. शिक्षा मनोविज्ञान एच. एस. सिन्हा और रचना शर्मा, 2004
3. शिक्षा में मनोवैज्ञानिक परिदृश्य प्रो. रमन बिहारी लाल एवं सुनीता पलोड, 2023
4. शिक्षा मनोविज्ञान, सुधा अग्रवाल, 2017
5. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान- डॉ. मोहम्मद सुलेमान, 2007
6. Essentials of Educational Psychology, 3rd Edition- Agarwal J.C., 2014
7. Advanced Educational Psychology-S S. Chauhan, 1987
8. Indian Psychology and Education Perspectives 2010

****